B.A. Part-II Psychology (Subsidiary)
Abnormal Psychology
Teacher - A.K. Sinha
Topic - Aspects of Mind   पृष्ठ संख्या - 1

Aspects of Mind का प्रादुर्भाव Dr. Sigmund Freud के 'मनोविश्लेषण सिद्धान्त' (Psycho-Analysis) से हुआ। Freud मूल रूप से विएना के निवासी थे। इन्होंने Pharmacology & Neurology में विशेषज्ञता प्राप्त की। इन्होंने शार्को (Charcot) के अधीन Hysteria के रोगी के अध्ययन के लिए पेरिस गये। इसी क्रम में इन्होंने "Psycho-analysis Theory" का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त के आधार पर मानसिक क्षेत्र से जुड़े अनेक Diagnostic Aproaches का उद्भेद किया। Aspects of mind भी उनमें से एक है। Freud के अनुसार मन (Mind) के निम्नलिखित दो पहलू होते हैं

A - मन के गत्यात्मक पहलू (Dynamic Aspects of mind.)
B - मन के आकारात्मक पहलू (Topographical Aspects of mind.)।

यहाँ पर प्रस्तुत मन के गत्यात्मक पहलू का वर्णन उचित प्रतीत

A है। Freud ने मन के गत्यात्मक पहलू के अन्तर्गत मुख्यतः तीन प्रतिनिधियों के रूप में उल्लेख किया है जो निम्नांकित है।

(1) उपाहं (Id);
(2) अहं (Ego),
(3) पराहं (Super Ego)।

अब उपर्युक्त मन के गत्यात्मक पहलुओं पर एक-एक कर चर्चा करना अपेक्षित हो जाता है।

(i) उपाहं (Id):— यह मन के गत्यात्मक पहलू का पहला प्रतिनिधि है। इसे पूर्णतः अचेतन माना जाता है इसलिए इसकी विशेषताओं को समझना कठिन है परन्तु जब हम छोटे बच्चों के स्वभावगत विशेषताओं पर ध्यान देंगे तो उपाहं के विशेषताओं को आसानी से समझ सकते हैं। उपाहं की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:—

(a) (Id) उपाहं जीवन-मृत्यु की मूल प्रवृत्तियों का भंडार है क्योंकि यह मनोजैविक इच्छाओं की जननी है। यह हर प्रकार की रचनात्मक (Constructive) एवं विध्वंसकारी (Distructive) क्रियाओं को उत्पन्न करती है। बच्चों में केवल उपाहं (Id) ही पाया जाता है। यही कारण है कि बच्चे खिलौनों के साथ खेलने के क्रम में कभी उसे प्यार से चूमते हैं तो कभी उसे फटकार भी लगाते देखे जाते हैं।

(b) उपाहं सुख के नियम से संचालित होता है। (Id is guided by the pleasure principle):— उपाहं आनन्द की प्राप्ति के सिद्धान्त से संचालित होता है। जैविक जीवन क्रियाओं से

शेष P.T.O.

आनन्द या सुख की उम्मीद होती है, उपाहं उन्हीं क्रियाओं को पाना चाहता है। खास कर यह बच्चों में अधिकतर देखा जाता है।

(c) उपाहं का सम्बन्ध वास्तविकता से नहीं रहता है। (Id is not concerned with Reality.) :- जैसा कि बच्चों को वास्तविकता का कोई ज्ञान नहीं होता है उसी प्रकार उपाहं को वास्तविक परिस्थितियों से कोई सम्बन्ध नहीं रहता है। उपाहं परिस्थितियों का बिना कोई विचार किये हुए इच्छाओं को उत्पन्न या उसकी तुष्टि चाहता है।

(d) उपाहं में तार्किक दोष पाया जाता है। (Id is suffers from logical fallacy.) → प्रायः देखा जाता है कि बच्चे अपनी इच्छा की पूर्ति हर हाल में पाना चाहते हैं, वे इसके तर्क विरुद्ध का कोई ध्यान नहीं देते हैं। ठीक इसी प्रकार का स्वरूप Id यानि उपाहं का भी होता है। उपाहं में भी तर्क का कोई ध्यान नहीं होता है, यह इच्छापूर्ति के प्रसंग में तर्क का कोई ध्यान नहीं देता है।

(e) उपाहं नैतिकता से परे होता है। (Id is "A-moral") :- उपाहं न नैतिक होता है और न अनैतिक यानि बच्चों की तरह ही (Id) उपाहं को नैतिक तथा अनैतिक क्रियाओं में कोई अन्तर नहीं दिखता है। इसीलिए Id हर नैतिक तथा अनैतिक इच्छाओं की पूर्ति चाहता है।

(f) उपाहं पूर्णतः अचेतन होता है। (Id is wholly unconscious) चूँकि उपाहं पूर्णतः अचेतन होता है इसीलिए इसे वास्तविक समय, सामाजिकता तथा नैतिकता आदि का ज्ञान नहीं होता है क्योंकि इनमें चेतना का पूर्ण अभाव रहता है।

(g) उपाहं स्वकेन्द्रित स्वरूप का होता है (Id is egocentric) :- जिस प्रकार बच्चे अपनी इच्छाओं की पूर्ति से मतलब रखते हैं उसी प्रकार (Id) उपाहं केवल अपनी इच्छाओं का ही पूर्ति चाहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि (Id) उपाहं को केवल अपने यानि स्व (self) से मतलब रखता है। अतः उपाहं egocentred होता है।

(h) उपाहं निषेध को नहीं ध्यान देता है :- बच्चों की तरह ही उपाहं 'नहीं' (No) या निषेध को नहीं मानता है, इसे समय तथा परिस्थिति की भी परवाह नहीं रहती। उपाहं तो केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति चाहता है और इसकी इच्छाएँ कभी भी समाज के रोक-टोक के उत्पन्न होती रहती है।

2. अहं (Ego) :- जब मनुष्य अपनी बाल्यावस्था से जैसे-जैसे बड़ा होने लगता है वैसे-वैसे उसे स्व का ज्ञान होने लगता है वह अपने आस-पास के परिवेश से परिचित होने लगता है साथ उसे वातावरण का बोध होने लगता है। इसी विकास के क्रम में कुछ अंशतक (Ego) अहं भी विकसित होने होने लगता है जिसके परिणाम स्वरूप उसे उसकी वास्तविक परिस्थितियों एवं 'स्व' के अस्तित्व की चेतना (Consciousness of The Self) होती है। फ्रायड के अनुसार 'स्व' की इसी चेतना को Ego की संज्ञा दी गई है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—

(a) अहं चेतन तथा अचेतन दोनों होता है। (Ego is partly Conscious and partly unconscious) :- Ego की सबसे बड़ी विशेषता है कि अहं चेतन तथा अचेतन दोनों स्वरूप का होता है। इसका चेतन स्वरूप वाह्य वास्तविकता से सम्बन्ध रखता है जबकि अचेतन भाग अचेतन रहता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि अहं (Ego) को Id उपाहं द्वारा उत्पन्न इच्छाओं की पूर्ति में अच्छे-बुरे परिणामों का ज्ञान होता है।

(b) अहं में तार्किक दोष नहीं पाया जाता है। (Ego is free from logical fallacy) :— (Ego) अहं को Id, उपाहं द्वारा उत्पन्न इच्छाओं की पूर्ति में अच्छे-बुरे परिणामों का ज्ञान होता है। इस प्रकार उपाहं द्वारा उत्पन्न इच्छाओं की पूर्ति करने में लाभ-हानि पर विचार करने में अहं (Ego) सजग होता है। और उसी के अनुसार इच्छाओं की पूर्ति का व्यवस्था करता है।

(c) अहं (Ego) को समय तथा वास्तविकता का ज्ञान रहता है। (Ego has the knowledge of 'time' & 'reality') :— चूँकि अहं (Ego) का चेतन भाग वातावरण के वास्तविकताओं के सम्पर्क में रहता है इसलिए इसे समय और वास्तविकता का ज्ञान रहता है। अतः किसी इच्छा की पूर्ति कब, किस स्थान तथा किस ढंग से किया जाना चाहिए इसका ज्ञान अहं (Ego) को रहता है।

(d) अहं (Ego) व्यक्ति और वातावरण के बीच समायोजक का काम करता है। (Ego functions as adjustor between the individual and environment.) — अहं (Ego) एक शासक या प्रबन्धक के रूप में काम करता है। यह व्यक्ति के सभी प्रकार के व्यवहारों का वातावरण के वास्तविकताओं के आलोक में नियंत्रण और संचालन करता है।

(e) अहं (Ego) का सम्बन्ध नैतिकता से नहीं है। (Ego is not Concerned with morality.) अहं (Ego) का सम्बन्ध नैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों से नहीं होता है। अच्छा-बुरा, पाप-पुण्य से अहं का कोई वास्ता नहीं होता है। यह केवल उपयुक्त अवसर की ताक में रहता है। इस प्रकार इसका (Ego) अवसरवादी स्वरूप प्रकट होता है।

3. पराहं (Super Ego) :— पराहं (Super Ego) मन के गत्यात्मक पहलू का तीसरा एवं प्रमुख प्रतिनिधि है। व्यक्ति जब सामाजिक वातावरण के सम्पर्क में आता है तो सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानदण्डों, मूल्यों (Values) तथा आदर्शों (Ideals) आदि को सीखता है। परिणाम स्वरूप अहं का ही एक अंश पराहं (Super Ego) के रूप में विकसित होता है। यह आदर्शों का जनक होता है और सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण से पूर्णतः प्रभावित भी होता है। इसकी निम्नांकित विशेषताएं हैं :—

(a) पराहं पूर्णतः चेतन होता है। (Super Ego is wholly Conscious) पराहं विशेषतः चेतन मन का प्रतिनिधि होता है। इसीलिए इसका सम्बन्ध वातावरण की वास्तविकता से रहता है।

(b) पराहं आदर्शों का भण्डार है (Super Ego has full stock of ideals) पराहं को परम्परावादी, ~~[illegible]~~ आदर्शवादी एवं विवेकी होने की संज्ञा दी जाती है। यह सामाजिक परम्पराओं, सांस्कृतिक मूल्यों और आदर्शों का भण्डार होता है।

(c) पराहं समाजीकरण की प्रक्रिया में प्रमुख शक्ति के रूप में कार्य करता है। :— चूँकि पराहं (Super Ego) का विकास सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से होता है और इसके नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों का भण्डार होता है इसलिए यह व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया में तथा सामाजिक नियंत्रण में मुख्य भूमिका निभाता है।

(d) पराहं से दोष तथा पश्चाताप की भावना उत्पन्न होती है :— पराहं (Super Ego), इदं (Id) की मूल प्रवृत्तियों (Instincts) पर प्रतिबंध का कार्य करता है। यह सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विपरीत आचरण एवं इच्छाओं की अभिव्यक्ति पर नियंत्रण रखता है तथा ऐसे विपरीत आचरणों के लिए पश्चाताप और दोष की भावना का विकास भी करता है। इसलिए इसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि :—
"Super ego functions as a policeman, a judge & a jury."

(e) पराहं का विकास समाज और संस्कृति से होता है :— पराहं का समाज और संस्कृति से गहरा सम्बन्ध होता है। अतः इसका विकास सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों, रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं आदि से ही होता है।